ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो बन्धुर्जनिता। यजु0 32/10
वह परमेश्वर हमारा बन्धु और उत्पादक है।
That Lord is our creator and closest friend.

वर्ष 36, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 अक्तूबर, 2013 से रविवार 20 अक्तूबर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जीवन निर्माण के सोपान

जीवन निर्माण पर सोचने से पूर्व यह आवश्यक है कि हम यह भी समझते कि जीवन क्या है। 'जीव प्राणधारणे' धातु के अनुसार प्राण धारण करने के लिए मनुष्य-पशु आदि के शरीर को जीवित समझा जाता है। प्राण निकलते ही यह शरीर मृत हो जाता है। तो क्या शरीर में प्राण चलते रहने का नाम जीवन हैं। समझा तो ऐसा ही जाता है। किन्तु ऐसा तो पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि सभी कोई कर रहे हैं। फिर मनुष्य तथा अन्य जीवों में क्या विशेषता है। हाँ वे सभी जीव हैं क्योंकि वे प्राणधारण कर रहे हैं किन्तु मनुष्य तो जीव के साथ-साथ मनुष्य भी है। मनुष्य, क्या मतलब? मतलब यह कि अन्य प्राणी केवल जीवन धारणकर रहे हैं। श्वास ले रहे हैं, खा-पी रहे हैं, सन्तान का निर्माण कर रहे हैं तथा अन्त में मर रहे हैं। तो क्या इसी पूरी प्रक्रिया का नाम जीवन है। नहीं, मनुष्य से भिन्न अन्य प्राणियों को तो यह भी नहीं पता कि वास्तविकता क्या है। आत्मा तो क्या उन्हें तो शरीर का भी ज्ञान नहीं। जबकि मनुष्य को पता है कि जीव केवल शरीर तक ही सीमित नहीं है। शरीर के भीतर कोई एक तत्त्व आत्मा बैठा हुआ है जो इस शरीर को चला रहा है। उसके रहने पर ही शरीर को जीवित कहा जाता है तथा उसके निकल जाने पर उसी प्रिय, सुन्दर, बलिष्ठ शरीर को अग्नि में जला दिया जाता हैं या भूमि में दफना दिया जाता है। इस प्रकार शरीर में आत्मा के रहने पर ही जीवन है, उसके बिना नहीं।

जीवन निर्माण- प्रश्न है जीवन निर्माण का। निर्माण किसका! शरीर का या आत्मा का। शरीर का निर्माण तो हो चुका। माता-पिता ने हमें जन्म दे दिया। आत्मा का निर्माण किया ही नहीं जा सकता क्योंकि वह तो निराकार, निरवयव हैं। तो जीवन निर्माण कैसे हो? जीवन निर्माण का अर्थ है- शरीर तथा आत्मा दोनों में उत्कृष्ट गुणों का आधान करना तथा यह कार्य जन्म के पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है। संसार में हम उत्कृष्ट जीवन तथा निकृष्ट जीवन के रूप में प्राणियों के दो भेद देखते ही हैं। इस उत्कृष्टता की उत्पत्ति को ही जीवन निर्माण कहा जाता है। यदि यह भेद न हो तो मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सभी प्राणी एक जैसे ही हो जाएं। किन्तु ऐसा है नहीं। पशु-पक्षियों की बात छोड़ें, उन सबका जीवन लगभग एक जैसा ही होता है क्योंकि उसका निर्माण नहीं किया गया है जबकि मनुष्यों का जीवन उत्कृष्ट तथा निकृष्ट होता है। यह सब निर्माण का ही भेद है।

जीवन निर्माण के सोपान- जीवन निर्माण जन्म के बाद ही शुरु नहीं होता, अपितु उसका प्रारम्भ तो जन्म के बहुत समय पहले ही प्रारम्भ हो जाता है। मनुष्य का निर्माण किन तत्त्वों के आधार पर होता है, इसे दर्शाने वाली एक उक्ति है-

तुखम्, तासीर, सोहबत का असर।

तुखम् अर्थ है बीज, तासीर का अर्थ है-अपनी प्रकृति या संस्कार। सोहबत संगति को कहते हैं। यहां जीवन निर्माण के तीन स्तर गिनाए हैं। मनुष्य ही नहीं, अपितु वृक्ष आदि की उत्पत्ति में भी ये तीन ही कारण प्रमुख हैं। हम रोज देखते हैं कि भूमि में जैसा बीज बोते हैं, वैसा ही पौधा उगता है। उत्तम बीज डालने पर पैदावार अच्छी होती है। घटिया, गन्दा बीज डालने में या तो पौधा उगता ही नहीं, यदि उगता भी है तो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। उत्तम बीज के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि जहां यह बोया गया है, वह भूमि भी उत्तम तथा घास, कंकड़-पत्थर आदि से रहित हो। यह प्रथम चरण है।

द्वितीय चरण यह है कि बीज बोने के पश्चात् जब तक वह अंकुरित होकर भूमि से बाहर नहीं आ जाता तब तक भी उसकी पर्याप्त देखभाल करनी पड़ती है। खाद-पानी की आवश्यकता होती है तो वह भी उसे दिया जाता है। इसके बाद तृतीय अवस्था है कि उगने के बाद भी पौधे की रक्षा अतियत्नपूर्वक करनी पड़ती है। यह दो रूपों में होती है-

- शेष पृष्ठ 3 पर

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में एक शाम बलिदानियों के नाम सम्पन्न

राष्ट्र-धर्म के बलिदानियों को हमेशा स्मरण रखेगा आर्यसमाज

आर्य सम्मेलन मॉरीशस का निमन्त्रण देने पधारे आर्यसभा मॉरीशस के उप प्रधान श्री उदयनारायण गंगू जी का किया गया स्वागत

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा अपने राष्ट्र के बलिदानियों को श्रद्धाजंलि व नमन करने हेतु एक शाम बलिदानियों के नाम पर कवि सम्मेलन का आयोजन दल के मुख्य कार्यालय "आर्यसमाज मिण्टो रोड" पर 2 अक्टूबर सायं 3:30 बजे से आयोजित किया गया। इस आयोजन में लगभग 8 कवियों को आमंत्रित किया गया। जिन्होंने राष्ट्र के देशभक्तों को अपने ही अन्दाज में अपनी देशभक्ति कविताओं से नमन व याद करते हुये जोशीले स्वर में श्रद्धांजलि दी व साथ ही समाज में जिस प्रकार पनप रहे भ्रष्टाचार व कुरीतियों पर सभी का ध्यान आकृष्ट करते हुये आह्वान किया कि हमें वेदोधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चलते हुये राष्ट्र व समाज को अनुशासित, सुशासित व संस्कारित बनाना चाहिये। इस कवि सम्मेलन में कवियों के रुप में सर्व श्री सुनहरी लाल वर्मा 'तुरन्त', नीरज

- शेष पृष्ठ 5 एवं 6 पर

आर्यसभा मॉरीशस के उप प्रधान श्री उदयनारायण गंगू जी का स्वागत के अवसर पर मंच पद उपस्थित सर्वश्री विनया आर्य, शिवकुमार मदान, धर्मपाल आर्य, वीरेश आर्य एवं अन्य महानुभाव। इस अवसर पर उपस्थित आर्यजन

वेद-स्वाध्याय

माता कैसा पुत्र जने

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावावस्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट्। ऊर्ध्वा यच्छ्रेणिर्न शिशुर्दन्मक्षू स्थिरे शेवृधं सूत माता। ऋग्वेद 10/61/10

अर्थ—जो **(अध आसु)** इन चारों दिशाओं में **(मन्द्रः)** प्रसन्नता का हेतु **(अरतिः)** गतिशील **(विभावा)** दीप्तिमान् **(द्विवर्तनिः)** इस लोक-परलोक दोनों का आश्रय **(वनेषाट्)** बांटकर खाने वाला **(अवस्यति)** सेवाभावी **(ऊर्ध्वः श्रेणिर्न)** सेना के समान अग्रणी हो जो **(मक्षू)** शीघ्र ही **(शिशुर्दन्)** शत्रुओं का नाश कर देता है, ऐसे **(शेवृधम्)** सब सुखों के देने वाले (स्थिरम्) स्थिरमति पुत्र को **(माता सूत)** जन्म दे।

वैदिक संस्कृति में माता का स्थान सर्वोपरि है। उसे भूमि से भी भारी अर्थात् गृह भार का वहन करने वाली कहा है। शास्त्रों ने **माता निर्मात्री भवति** माता को सन्तानों का निर्माण करने वाली बतलाया है जो योग्य सन्तान का निर्माण कर समाज, राष्ट्र को देती है। गर्भावस्था से लेकर पाँच वर्ष तक बालक की गुरु माता ही होती है। इस समय बालक को जो संस्कार या सदुपदेश माता देती है, वे जीवन भर उसके हृदय पटल पर अंकित रहते हैं। मन्त्र में माता कैसा पुत्र उत्पन्न करे इसे बतलाया है—

१. अधासु मन्द्रः—जो चारों दिशाओं में कुल-परिवार की प्रशंसा की वृद्धि कराने वाला हो। जिसे देख सब हर्षित होवें कि यह अमुक का पुत्र है। ऐसा तभी होगा जब माता-पिता ने उसे आचार-विचार की शिक्षा दी हो और जिसने योग्य गुरु के चरणारविन्दों में रहकर विद्या प्राप्त की हो।

२. **अरतिः** जो गतिशील, पुरुषार्थी और उन्नति की ओर अग्रसर हो। जिसमें उत्साह, उमंग और जोश का समुद्र ठाठें मार रहा हो और किसी भी चुनौती को स्वीकार कर उससे जूझने का साहस रखता हो। जिसकी बुद्धि में जड़ता के स्थान पर रचनात्मक और निर्णय लेने की क्षमता हो।

३. **विभावा**—जो अपने बल-पराक्रम और बुद्धि से सर्वत्र प्रकाशित हो रहा हो अर्थात् जिसकी सब प्रशंसा कर रहे हों। जैसे उदित हुआ सूर्य सारे गगन-मण्डल को प्रकाशित कर देता है उसी भाँति गुणों से सुशोभित पुत्र कुल का दीपक होता है।

४. द्विवर्तनिः—जो इस लोक और परलोक दोनों का आश्रय हो। इस लोक में सेवा-सुश्रूषा द्वारा माता-पिता और परिवार को सुख देने वाला और माता-पिता के दिवंगत हो जाने पर भी उनके पद-चिह्नों पर चलता हुआ उनकी यश-कीर्ति को बढ़ाता है उसे **'द्विवर्तनि'** कहते हैं।

५. **वनेषाट्**—जिसका स्वभाव बाँट कर खाने का है। अपने भाई-बहिन और मित्रों के साथ मिलकर ही किसी उत्तम पदार्थ का उपभोग करता और माता-पिता को प्रथम भोजन कराकर फिर स्वयं भोजन ग्रहण करता हो ऐसा पुत्र सबका प्रिय होता है। जो अकेला खाता है। वह पाप को ही खा रहा है ऐसा मानना चाहिये।

६. अवस्यति—सेवा करना जिसका धर्म है। माता-पिता एवं अपने से बड़ों को अभिवादन, उन्हें भोजन-छादन से तृप्त करना और उत्तम शिक्षा ग्रहण कर तदनुसार आचरण करना उसका नित्य नियम बन गया है।

७. ऊर्ध्वा यत् श्रेणिर्न शिशुर्दन्—जो आगे बढ़कर शत्रु सेना का संहार करता है ऐसे

८. स्थिरम्—स्थिर मति और ९. **शेवृधम्** सब सुखों को देने वाले पुत्र को माता जन्म देकर कृतार्थ करे। कहा भी है—

जननी जने तो भक्त जन या दाता या शूर। नहीं तो जननी बांझ भली काहे गंवाये नूर॥

ऋग्वेद के दशवें मण्डल सूक्त ४७ में पुत्र रूप धन को मांगने की कामना की गई है—

स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम्।

चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ऋ० १०.४७.२

हे परमात्मन्! आप हमें (चित्रम्) अद्भुत गुणों और दूसरों को चिताने वाला और (वृषणम्) बलवान् सुखों की वर्षा करने वाला (रयिम्) पुत्र-रूप धन (दाः) दीजिये जिसमें निम्न गुण हों—

१. स्वायुधम्—जिसके आयुध—अस्त्र-शस्त्र और मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि उत्तम हों जो इन शस्त्रास्त्रों को चलाने में समर्थ हों।

२. स्ववसम्—वस—आच्छादने जो अपनी, परिवार तथा राष्ट्र की रक्षा भलीभाँति कर सके। माता-पिता की सेवा करने वाला और शस्त्रास्त्रों का ज्ञाता हो।

३. सुनीथम्—जिसकी नीतियाँ अर्थात् आचार-विचार सुन्दर हों। जो सत् पथगामी और सदाचारी हो। बड़ों का आदर, छोटों को प्रेम और मित्रों का स्नेही हो।

४. चतुःसमुद्रम्—जिसका यश चारों समुद्रों तक व्याप्त हो जाये।

५. धरुणं रयीणाम्—जिसने अपनी बुद्धि-कौशल से नाना प्रकार के धन एवं विद्याओं को धारण किया है।

६. चर्कृत्यम्—अत्यधिक कर्मठ, पुरुषार्थी और तत्परता से कार्य करने के स्वभाव वाला।

७. शंस्यम्—सर्वगुण-सम्पन्न, जिसकी सब लोग प्रशंसा करें।

८. भूरिवारम्—जो सबका वरणीय, सब कष्टों को दूर करने वाला और सर्वप्रिय हो।

ऐसा पुत्र प्राप्त करने के लिये श्रीकृष्ण और देवी रुक्मिणी के समान तप और संयम का जीवन व्यतीत करना होगा जिन्होंने विवाह के पश्चात् बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये अन्तिम वर्ष बदरीनाथ में रहकर योग-साधना की ओर फिर विधिपूर्वक सन्तानकर्म का अनुष्ठान कर प्रद्युम्न जैसे पुत्र की प्राप्ति की जो रूप-लावण्य और बल-पराक्रम में श्रीकृष्ण जी के ही सदृश था। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने वनवास में संयम का पालन किया और अयोध्या लौटकर लव-कुश दो पुत्ररत्नों को पाया जिन्होंने अपने पराक्रम से अश्वमेध के घोड़े को पकड़ लक्ष्मण और फिर श्रीरामचन्द्र जी को भी परास्त किया। ऐसा पुत्र पाकर उसके माता-पिता धन्य हो जाते हैं। - *क्रमशः*

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर दिल्ली द्वारा एकत्र राशि

685	सर्वश्री विजेन्द्र सोलंकी	500
687	सत्यप्रकाश लाम्बा	201
688	रवि सुपुत्र श्री चन्द्रभान सोलंकी	5100
689	सरजीत सोलंकी	1100
690	श्रीमती सरीता देवी	101
691	बबलू ढाबा	501
692	जयपाल सोलंकी	101
693	प्रकाश सोलंकी	500
694	जयदेव सोलंकी	101
695	सुरेश कुमार शर्मा	20
696	धर्मदत्त शर्मा	51
697	सुरेश कुमार मैडिकोज	101
698	मनीष गोड़	100
699	श्रीमती आशा काकराण	501
700	उमेश कुमार गौड़	501
701	रमेश सोलंकी	201
702	श्रीमती रामकौर सोलंकी	501
703	कृष्ण लाम्बा	201
704	यशपाल सोलंकी	501
705	श्रीमती लता सोलंकी	501
706	रणधीर प्रजापत	100
707	ओम प्रकाश प्रजापत	200
708	बल्ली केबल	500
709	हरिचन्द सोलंकी	500
710	राम भगत सोलंकी	500
711	रमेश सोलंकी	100

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिस बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

जीवन निर्माण के सोपान

तेज धूप, वर्षा, सर्दी, तथा रोगों आदि से नन्हें पौधों को बचाना तथा उचित मात्रा में खाद-पानी देकर उसकी वृद्धि करना। संसार भर में यही प्रक्रिया है इसमें किसी देश, धर्म तथा जाति का भेद नहीं है।

मानव उत्पत्ति की प्रक्रिया- मानव निर्माण की भी यही प्रक्रिया है। हम में भी देश-जाति तथा धर्म अथवा मजहब आदि का भेद नहीं है। सभी मनुष्यों की उत्पत्ति की प्रक्रिया एक जैसी ही है चाहे कोई किसी भी देश तथा धर्म से सम्बन्धित है। इसमें अब तक न तो कोई परिवर्तन कर सका है न आगे होने की आशा है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, धनी, निर्धन, राजा, रंक, भारतीय, विदेशी आदि सभी की उत्पत्ति माता-पिता के संयोग से एक ही प्रकार से होती है। नवजात बच्चे सब एक जैसे ही होते हैं। उनमें इस प्रकार का भेद होता भी नहीं है। यह भेद तो उनके माता-पिता, धर्म-मजहब तथा देश-नाते उनको प्रदान करते हैं।

मानव निर्माण की प्रक्रिया- जब सबकी उत्पत्ति की प्रक्रिया समान है तो उसके निर्माण की प्रक्रिया भी समान ही होनी चाहिए। बच्चा अबोध रूप में जन्म लेता है। उस पर हम जैसे भी संस्कार डाल देंगे, वह वैसा ही बन जायेगा। उसका निर्माण हमारे अधीन है। इस कार्य में बच्चे के माता-पिता, शिक्षक, समाज आदि सभी का सहयोग रहता है। इन सभी का यत्न होता है कि बच्चा बड़ा होकर सभ्य एवं सुसंस्कृत बने जिससे कि समाज एवं देश के लिए उपयोगी हो सके। वेद में इसी लिए कहा गया है-**जनम् दैव्यं जनम्।** अर्थात् दिव्य गुणों से युक्त सन्तान को जन्म दो।

जीवन निर्माण के सोपान

प्रथम सोपान- पौधों के भांति ही बच्चे का निर्माण भी उसके जन्म से बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है। प्रथम सोपान के रूप में हैं उसके माता-पिता। माता-पिता का जैसा स्वभाव, स्वास्थ्य आदि होता है बच्चे पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ माता-पिता की सन्तान स्वस्थ होती है इसके विपरीत माता-पिता के अनेक शारीरिक रोग जन्म से बच्चे को प्राप्त हो जाते हैं। उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिए अनेक माता-पिता कठिन तपस्या भी करते हैं। यथा भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी रूक्मिणी के साथ विवाह के बाद भी 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था तभी तो उन्होंने प्रद्युम्न पराक्रमी पुत्र को प्राप्त किया जो शौर्य आदि की दृष्टि से बिल्कुल श्रीकृष्ण के समान ही था।

द्वितीय सोपान- जीवन निर्माण का द्वितीय सोपान गर्भावस्था से लेकर बच्चे के जन्म तक है। इस अवधि में भी उसके शरीर तथा आत्मा को इच्छानुसार ढाला जा सकता है। यह ऐसे ही नहीं हो जाता, अपितु इसके लिए प्रयत्न करना पड़ता है। यह प्रयत्न दो रूपों में होता है- माता के आहार के रूप में तथा शुभ क्रियाओं के द्वारा गर्भस्थ शिशु पर डाले गये उत्तम संस्कारों के रूप में। माता का जैसा भी आहार होगा, बच्चे का स्वास्थ्य वैसा ही बनेगा। तथा जैसा उसका विचार-व्यवहार होगा, बच्चे पर भी उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। महाभारत काल की घटना प्रसिद्ध ही है कि अभिमन्यु ने गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदन की कला सीख ली थी। अभिमन्यु के पिता अर्जुन अपनी पत्नी सुभद्रा को यह विद्या समझा रहे थे। गर्भस्थ अभिमन्यु ने उसे ज्यों का त्यों समझ लिया। पुंसवन तथा सीमन्तोनयन संस्कार इसी उद्देश्य से बच्चे के जन्म से पूर्व ही कर दिये जाते हैं।

तृतीय सोपान- जीवन निर्माण का तृतीय सोपान बच्चे के जन्म से लेकर 8-10 वर्ष तक है। इस अवधि में भी उसे अभीष्ट दिशा में चलाया जा सकता है। इस समय बहुत सावधानी की जरूरत पड़ती है। बच्चे के शरीर, मन, मस्तिष्क सभी अत्यन्त कोमल हैं। उनको यत्नपूर्वक हम इच्छित दिशा में चला सकते हैं। इस अवस्था में बच्चे के माता-पिता ही उसके गुरु तथा जीवन निर्माता हैं। वे बच्चे की इच्छानुसार किसी भी दिशा में ढाल सकते हैं। **'मातृमान् पितृमान् पुरुषः'** इसीलिए कहा गया है। आज कल इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता। बड़ा होने पर उसे बदलना कठिन है।

चतुर्थ सोपान- किशोरावस्था से लेकर युवावस्था की समाप्ति तक जीवन निर्माण का चतुर्थ सोपान है। इस अवधि में बच्चा जो भी शिक्षा प्राप्त करता है, जैसे वातावरण में रहता है जैसा भोजन आदि करता है, उसी के अनुसार उसका जीवन बन जाता है। शेष जीवन वह इसी आधार पर व्यतीत करता हैं। बच्चे का यह निर्माण गुरुकुल में आचार्य के संरक्षण में होता था। वह उसे माता के समान ही अपने संरक्षण रूपी गर्भ में रखता था। आजकल यह प्रक्रिया भी समाप्त हो गयी। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध भी समाप्त हो गया है।

पंचम सोपान- पंचम सोपान 25 से लेकर 50 वर्ष तक है जबकि वह शिक्षा को प्राप्त करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। इस आश्रम में उसे अनेक सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। इस लम्बी अवधि में वह मार्ग भ्रष्ट न हो जाये। उसका जीवन शुद्ध-पवित्र रहे, यह अति आवश्यक है। इसके लिए गृहस्थ के लिए पंच महायज्ञों का विधान आवश्यक कर दिया गया है। इनमें भी आजकल शैथिल्य देखा जा रहा है। यही कारण है कि हमारा जीवन पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, स्वार्थ, लाभ, मोह आदि दोषों से संयुक्त रहता है। यह नारकीय जीवन है।

षष्ठ सोपान- इसके बाद वह सांसारिक कार्यों से मुक्त होकर अपनी आत्मोन्नति के लिए यत्न करता है। गृहस्थ आश्रम में जो कमजोरियां उसके शरीर तथा मन में आ गयी थीं उनको दूर करने का यत्न करता है। प्राचीन परम्परा में इसके लिए ही वानप्रस्थ तथा संन्यास का विधान किया गया है। इस समय मनुष्य का जीवन सामाजिक एवं राष्ट्रीय बन जाता है। यह संस्कारित एवं पूर्ण जीवन की पराकाष्ठा है।

जीवन निर्माण के साधन

संस्कार- जीवन को उन्नति की ओर चलाने के लिए ही भारतीय मनीषियों ने संस्कारों का आविष्कार किया। ये संस्कार संख्या की दृष्टि से सोलह हैं। इनमें मनुष्य जन्म से मृत्यु तक का जीवन बंधा है। यदि ध्यान से देखें तो जन्म से पूर्ववर्त्ती समय तथा मृत्यु से परवर्त्ती अगले जन्म को भी इन संस्कारों के द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि शरीर तथा आत्मा दोनों की संयुक्त अवस्था का नाम ही जीवन है। इन सोलह संस्कारों के द्वारा शरीर तथा आत्मा दोनों को ही उन्नत बनाने का यत्न किया जाता है। इन संस्कारों का प्रयोग बच्चे के जन्म से पूर्व माता की गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है जो कि मृत्यु तक चलता रहता है। इन संस्कारों में एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया निहित है जिसे अपनाकर व्यक्ति के शरीर एवं आत्मा पूर्णतः समुन्नत हो जाते हैं।

संस्कार एवं संस्कृति- आत्मा एवं शरीर को समुन्नत बनाने की जो प्रक्रिया मनीषियों ने अपनायी, उसी का नाम संस्कार है। **सांस्क्रियतेऽनेन इति संस्कारः** अर्थात् जिसके द्वारा आत्मा तथा शरीर का निर्माण अच्छी प्रकार किया जाए, उनको समुन्नत बनाया जाए, उसे ही संस्कार कहते है। यह प्रक्रिया मानवमात्र के लिए एक जैसी ही है तथा समान रूप में लाभप्रद है। किसी भी जाति, धर्म, देश का व्यक्ति इसे अपनाएगा तो निश्चित ही उसकी शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति होगी।

संस्कार के बिना मनुष्य पशु तुल्य ही रहता है। संस्कारों के द्वारा ही उसके जीवन में गुणाधान किया जाता है जिससे उसका जीवन परिवर्तन हो जाता है। जो इस प्रकार समझा जा सकता है कि दाल-सब्जी बना लेने पर उसमें जीरे आदि का छोंक (बघार) लगाया जाता है जिससे वह स्वादिष्ट तो बनती ही है, उसके गुणों में भी परिवर्तन हो जाता है। दूसरा उदाहरण-एक भद्दी सी लकड़ी को छील-छील कर बढ़ई उसमे सुन्दर मेज-कुर्सी आदि बना देता है। यही उस लकड़ी का संस्कार है। जो लकड़ी अब तक किसी काम की न थी अब कुर्सी-मेज के रूप में प्रिय एवं उपयोगी बन जाती

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

महात्मा गाँधी, इस्लाम और आर्यसमाज

- डॉ० विवेक आर्य

Mahatma and Islam - Faith and Freedom: Gandhi in History के नाम से मुशीरुल हसन नामक लेखक की नई पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें लेखक ने इस्लाम के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी के विचार प्रकट किये हैं। इस पुस्तक के प्रकाश में आने से महात्मा गाँधीजी के आर्यसमाज से जुड़े हुए पुराने प्रसंग मस्तिष्क में पुनः स्मरण हो उठे। स्वामी श्रद्धानंद जी की कभी मुक्तकंठ से प्रशंसा करने वाले महात्मा गाँधीजी का स्वामी जी से कांग्रेस द्वारा दलित समाज का उद्धार, इस्लाम, शुद्धि और हिन्दू संगठन विषय की लेकर मतभेद था। महात्मा गाँधी ने आर्यसमाज, स्वामी दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश और स्वामी श्रद्धानंद जी के विरुद्ध लेख २९ मई १९२४ को "हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य, उसका कारण और उसकी चिकित्सा" के नाम से लिखा था। इस लेख में भारत भर में हो रहे हिन्दू-मुस्लिम दंगो का कारण आर्य समाज को बताया गया था। इस लेख का सबसे अधिक दुष्प्रभाव इस्लाम को मानने वालों की सोच पर पड़ा था क्योंकि महात्मा गाँधी का समर्थन मिलने से उन्हें लगने लगा था कि जो भी नैतिक अथवा अनैतिक कार्य वे इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए कर रहे हैं, वे उचित हैं एवं उनके अनैतिक कार्यों का विरोध करने वाला आर्यसमाज असत्य मार्ग पर है इसीलिए महात्मा गाँधी भी आर्यसमाज और उनकी मान्यताओं का विरोध कर रहे हैं। सब पाठकगण शायद जानते ही होंगे कि महात्मा गाँधी द्वारा रंगीला रसूल के विरुद्ध लेख लिखने के बाद ही मुस्लिम समाज के कुछ कट्टरपंथी तत्त्व महाशय राजपाल की जान के प्यासे हो गये थे जिसका परिणाम उनकी शहादत और इलमदीन की फाँसी के रूप में निकला था। महात्मा गाँधी के आर्यसमाज के विरुद्ध लिखे गए लेख का प्रतिउत्तर आर्यसमाज के अनेक विद्वानों ने दिया जैसे लाला लाजपत राय, मिस्टर केलकर, मिस्टर सी.एस.रंगा अय्यर, महात्मा टी. एल. वासवानी, स्वामी सत्यदेव जी एवं पंडित चमूपति जी आदि।

आर्य समाज की और से एक डेलीगेशन के रूप में पंडित आर्यमुनिजी, पंडित रामचन्द्र देहलवी जी, पंडित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति जी स्वयं गाँधीजी से उनके लेख के विषय में मिले परन्तु गाँधीजी ने उत्तर देने के स्थान पर टाल-मटोल कर मौन धारण कर लिया था।

कालांतर में सार्वदेशिक सभा दिल्ली के सदस्य श्री ज्ञानचंद आर्य जी ने अत्यंत रोचक पुस्तक उर्दू में 'इजहारे हकीकत' के नाम से लिखी जिसका हिन्दी अनुवाद 'सत्य निर्णय' के नाम से १९३३में छापा गया था। इस पुस्तक में लेखक ने महात्मा गाँधी द्वारा जो आरोप लगाये गये थे न केवल उनका यथोचित समाधान किया है अपितु गाँधीजी की हिन्दू धर्म के विषय में जो भी मान्यता थी उनका उचित विश्लेषण किया है।

आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान पंडित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड द्वारा आर्यसमाज और महात्मा गाँधी के शीर्षक से एक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी गई थी जिसका पुनः प्रकाशन घूड़मल ट्रस्ट हिंडौन सिटी राजस्थान ने हाल ही में किया है।

गाँधीजी के शुद्धि विषयक विचार आर्यसमाज की विचारधारा के प्रतिकूल थे। गाँधीजी एक ओर शुद्धि से हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा देना मानते थे दूसरी ओर मुसलमानों द्वारा गैर मुसलमानों की तब्लोग करने पर चुप्पी धारण कर लेते थे। १९२१ के मालाबार के हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय तो आर्यसमाज खिलाफत आन्दोलन के लिए मुसलमानों का साथ दे रहा था, फिर शुद्धि को हिन्दू मुस्लिम दंगों का कारण बताना असत्य नहीं तो और क्या था? मुल्तान में हुए भयंकर दंगों का कारण ताजिये के ऊपर बंधी डंडी का टेलीफोन की तार से उलझ कर टूट जाना था जिससे आक्रोशित होकर मुस्लिम दंगाइयों ने निरीह हिन्दू जनता पर भयंकर अत्याचार किये थे। कोहाट के दंगों का कारण एक हिन्दू लड़की को कुछ हिन्दू एक मुस्लिम की गिरफ्त से छुड़वा लाये थे जिससे चिढ़ कर मुसलमानों ने हथियार सहित हिन्दू बस्तियों पर हमला बोल दिया जिससे हिन्दू जनता को कोहाट से भागकर अपने प्राण बचाने पड़े थे। एक प्रकार के अन्य दंगों का कारण खिलाफत आन्दोलन के कारण बदली हुई मुस्लिम मनोवृति, अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति, हिन्दू संगठन का न होना एवं तत्कालीन कांग्रेस द्वारा नर्म प्रतिक्रिया दिया जाना था नाकि सत्यार्थ प्रकाश का १४वां समुल्लास, आर्यसमाज द्वारा चलाया गया शुद्धि आन्दोलन, शास्त्रार्थ एवं लेखन कार्य था।

विस्तार भय से हम गाँधीजी के विचारों को इस लेख में केवल शुद्धि विषय तक ही सीमित कर रहे हैं क्योंकि जहाँ एक ओर गाँधीजी ने आर्यसमाज के शुद्धि मिशन की भरपूर आलोचना की थी कालांतर में उन्हीं के सबसे बड़े सुपुत्र हीरालाल गाँधी के मुस्लमान बन जाने पर आर्यसमाज द्वारा ही शुद्धि द्वारा वापिस हिन्दू धर्म में दोबारा से शामिल किया गया था।

हीरालाल के धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम बन जाने पर महात्मा गाँधीजी का वक्तव्य (सन्दर्भ-सार्वदेशिक पत्रिका जुलाई अंक १९३६)

महात्मा गाँधी के सबसे बड़े पुत्र हीरालाल गाँधी तारीख २८ मई को नागपुर में गुप्त रीति से मुसलमान बनाये गये हैं और नाम अब्दुल्लाह गाँधी रखा गया हैं तथा २९ मई को बम्बई की जुम्मा मस्जिद में उनके मुसलमान बनने की घोषणा की गई।

कुछ दिन हुए यह खबर थी कि वे ईसाई होने वाले हैं पर बाद में हीरालाल गाँधी ने स्वयँ ईसाई न होने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि वे अपने पिता महात्मा गाँधी से मतभेद होने के कारण वे मुस्लमान हो गये हैं।

महात्मा गाँधीजी का वक्तव्य

बंगलौर २ जून। अपने बड़े लड़के हीरालाल गाँधी के धर्म परिवर्तन के सिलसिले में महात्मा गाँधी ने मुस्लमान मित्रों के नाम एक अपील प्रकाशित की हैं। अपील का आशय निम्न हैं:-

'पत्रों में समाचार प्रकाशित हुआ है कि मेरे पुत्र हीरालाल के धर्म परिवर्तन की घोषणा पर जुम्मा मस्जिद में मुस्लिम जनता ने अत्यंत हर्ष प्रकट किया है। यदि उसने हृदय से और बिना किसी सांसारिक लोभ के इस्लाम धर्म को स्वीकार किया होता तो मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। क्योंकि मैं इस्लाम को अपने धर्म के समान ही सच्चा समझता हूँ किन्तु मुझे संदेह हैं कि वह धर्म परिवर्तन हृदय से तथा बगैर किसी सांसारिक लाभ के किया गया है।'

शराब का व्यसन

जो भी मेरे पुत्र हीरालाल से परिचित हैं वे जानते हैं कि उसे शराब और व्यभिचार की लत पड़ी है। कुछ समय तक वह अपने मित्रों की सहायता पर गुजारा करता रहा। उसने कुछ पठानों से भी भारी सूद पर कर्ज लिया था। अभी कुछ दिनों की बात हैं कि बम्बई में पठान लेनदारों के कारण उसको जीवन के लाले पड़े हुए थे। अब वह उसी शहर में सूरमा बना हुआ हैं। उसकी पत्नी अत्यंत पतिव्रता थी। वह हमेशा हीरालाल के पापों को क्षमा करती रही। उसके ३ संतान हैं, २ लड़की और एक लड़का, जिनके लालन-पालन का भार उसने बहुत पहले ही छोड़ रखा हैं।

धर्म की नीलामी

कुछ सप्ताह पूर्व ही उसने हिन्दुओं के हिन्दुत्व के विरुद्ध शिकायत करके ईसाई बनने की धमकी दी थी। पत्र की भाषा से प्रतीत होता था हैं कि वह उसी धर्म में जायेगा जो सबसे ऊँची बोली बोलेगा। उस पत्र का वांछित असर हुआ। एक हिन्दू काउंसिलर के मदद से उसे नागपुर मुन्सीपालिटी में नौकरी मिल गई। इसके बाद उसने एक और वक्तव्य प्रकाशित किया और हिन्दू धर्म के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट की।

आर्थिक लालसा

किन्तु घटनाक्रम से मालूम पड़ता हैं की उसकी आर्थिक लालसाएँ पूरी नहीं हुईं और उसको पूरा करने के लिए उसने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया है। गत अप्रैल जब मैं नागपुर में था वह मुझ से तथा अपनी माता से मिलने आया और उसने मुझे बताया कि किस प्रकार धर्मों के मिशनरी उसके पीछे पड़े हुए हैं। परमात्मा चमत्कार कर सकता है। उसने पत्थर दिलों को भी बदल दिया है और एक क्षण में पापियों को संत बना दिया है। यदि मैं देखता कि नागपुर की मुलाकात में और हाल की शुक्रवार की घोषणा में हीरालाल में पश्चाताप की भावना का उदय हुआ है और उसके जीवन में परिवर्तन आ गया है, तथा उसने शराब तथा व्यभिचार छोड़ दिया हैं तो मेरे लिए इससे अधिक प्रसन्नता की और क्या बात होती?

जीवन में कोई परिवर्तन नहीं

लेकिन पत्रों की खबरें इसकी कोई गवाही नहीं देती। उसका जीवन अब भी यथापूर्व है। यदि वास्तव में उसके जीवन में कोई परिवर्तन होता तो वह मुझे अवश्य लिखता और मेरे दिल को खुश करता। मेरे सब पुत्रों के पूर्ण विचार स्वातन्त्र्य हैं। उन्हें सिखाया गया है कि वे सब धर्मों को इज्जत की दृष्टि से देखें। हीरालाल जानता है यदि उसने मुझे यह बताया होता कि इस्लाम धर्म से मेरे जीवन को शांति मिली है तो मैं उसके रास्ते में कोई बाधा न डालता। किन्तु हममें से किसी को भी, मुझे या उसके २४ वर्षीय पुत्र को जो मेरे साथ रहता है उसकी कोई खबर नहीं हैं।

मुसलमानों को इस्लाम के सम्बन्ध में मेरे विचार ज्ञात हैं। कुछ मुसलमानों ने मुझे तार दिया है की अपने लड़के की तरह मैं भी संसार के सबसे सच्चे धर्म इस्लाम को ग्रहण कर लूँ।

गाँधीजी को चोट

मैं मानता हूँ की इन सब बातों से मेरे दिल को चोट पहुँचती हैं। मैं समझता हूँ की जो लोग हीरालाल के धर्म के जिम्मेदार हैं वे एहतियात से काम नहीं ले रहे जैसा कि ऐसी अवस्था में करना चाहिए।

इस्लाम को हानि

हीरालाल के धर्म परिवर्तन से हिंदू धर्म को कोई क्षति नहीं हुई उसका इस्लाम प्रवेश उस धर्म की कमजोरी सिद्ध होगा। यदि उसका जीवन पहले की भांति ही बुरा रहा।

धर्म परिवर्तन मनुष्य और उसके सृष्टा से सम्बन्ध रखता है। शुद्ध हृदय के बिना किया हुआ धर्म परिवर्तन मेरी सम्मति में धर्म और ईश्वर का तिरस्कार हैं। धार्मिक मनुष्य के लिए विशुद्ध हृदय से न किया हुआ धर्म परिवर्तन दुःख की वस्तु है , हर्ष की नहीं।

मुसलमानों का कर्तव्य

मेरा मुस्लिम मित्रों को इस प्रकार लिखने का यह अभिप्राय है कि वे हीरालाल के अतीत जीवन को ध्यान में रखें और यदि वे अनुभव करें कि उसका धर्म परिवर्तन आत्मिक भावना से रहित है तो वे उसको अपने धर्म से बहिष्कृत कर दें तथा इस बात को देखें की वह किसी प्रलोभन में न पड़ें और इस प्रकार समाज का धर्म भीरु सदस्य बन जाये। उन्हें यह बात चाहिये कि शराब ने उसका मस्तिष्क खराब कर दिया हैं वह सत्-असत् विवेक की बुद्धि खोखली कर डाली है। वह अब्दुल्ला है या हीरालाल इससे मुझे कोई मतलब नहीं। यदि वह अपना नाम बदलकर ईश्वरभक्त बन जाता है तो मुझे क्या आपत्ति है क्योंकि अर्थ तो दोनों नामों का वही है।

महात्मा गाँधी ने अपने लेख में हीरालाल के इस्लाम ग्रहण करने पर न केवल अप्रसन्नता जाहिर की है अपितु उसे उसकी बुरी आदतों के कारण वापिस हिन्दू बन जाने की सलाह भी दी है। गाँधीजी इस लेख में मुसलमानों द्वारा किये जा रहे तबलीग कार्य की निन्दा करने से बच रहे हैं परन्तु उनकी इस वेदना को उनके भावों द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

माता कस्तूरबा बा का अपने पुत्र के

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक शाम बलिदानियों के नाम ....

गुप्ता 'राही', विनय 'विनम्र', श्रीमती सुधा 'शुद्धि', महेन्द्र चतुर्वेदी आदि उपस्थित थे। साथ ही दल की ओर से श्री सुन्दर आर्य, श्री वीरेश आर्य, श्री प्रतुल आर्य व श्री रोहताश आर्य ने बहुत ही सुन्दर व मार्मिक कविताओं द्वारा सभी को उत्साहित किया। आयोजन में लगभग दिल्ली में लगने वाली शाखाओं से 350 से अधिक आर्यवीरों व साथ ही कई आर्यसमाजों से आये हुये आर्य महानुभावों ने भाग लिया।

दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी ने राष्ट्र का गौरव तिरंगा फहराकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा के प्रधान ब्र॰ श्री राजसिंह आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल आर्य व वीरांगना दल से मंत्रीणी सुश्री लिपिका आर्या, सह-संचालिका श्रीमती स्नेह भाटिया, कोषाध्यक्ष शारदा आर्या, संरक्षक ब्र॰ सुमेधा आर्या व पूर्व-संचालिका श्रीमती वीना आर्या आदि गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए उपस्थित थे।

आयोजन में प्रदेश के नवनियुक्त संचालक श्री जगबीर आर्य ने अपनी कार्य समिति का विस्तार करते हुये श्री सुन्दर आर्य को सह-संचालक, श्री बृहस्पति आर्य को महामंत्री, श्री जितेन्द्र भाटिया को कोषाध्यक्ष, श्री जगबीर आर्य, श्री वीरेश आर्य, श्री रोहताश आर्य को उपसंचालक, ब्र॰ संदीप आर्य को बौद्धिकाध्यक्ष, श्री आनन्द आर्य को सहबौद्धिकाध्यक्ष, श्री दिनेश आर्य को प्रधान व्यायाम शिक्षक, श्री संजय आर्य को संगठन मंत्री, श्री पवन आर्य को

- शेष पृष्ठ 6 पर

एक शाम बलिदानियों के नाम कार्यक्रम में अपनी रचनाओं को देशभक्त शहीदों को याद करते आमन्त्रित कविगण, सभा अधिकारी एवं आर्यवीर दल के अधिकारी

समारोह में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य , उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के नए अधिकारियों को नियुक्ति पत्र देते संचालक श्री जगबीर सिंह एवं शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित आर्यजन

आर्यसमाज मुल्तान नगर नई दिल्ली में पधारने पर स्वामी रामदेव जी का स्वागत

'पुस्तकों से दोस्ती'

आर्यसमाज की सबसे मूल्यवान धरोहर अगर कोई है तो वह है उसका साहित्य। आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य का परिचय आज की युवा पीढ़ी अवगत करवाना हमारी जिम्मेदारी बनती हैं। इस भाव से आर्यसन्देश में हर सप्ताह एक पुस्तक का संक्षिप्त परिचय छापा जायेगा, जिससे उस पुस्तक से युवा पीढ़ी परिचित हो सके।- ***विनय आर्य***

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शानानन्द जी स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्य समाज के अनन्य प्रचारक, संस्कृत भाषा और वेद विद्या के अद्वितीय विद्वान, प्रकाण्ड पंडित, शास्त्रार्थ महारथी, सिद्धांत शिरोमणि और उच्च कोटि के आर्य लेखक थे। उनके जीवन का एक एक कार्य हमें प्रेरणा दे रहा हैं। स्वामी जी के ट्रैक्ट्स का संग्रह एवं उनकी जीवनी यह दो पुस्तकों नवयुवक आर्यों को जीवन में मार्गदर्शन देने के लिए, शंका समाधान के लिए, सिद्धांतों के परिचय को प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

मेरा सभी आर्य युवकों से अनुरोध हैं की इन दोनों पुस्तकों को स्वयं पढ़े और औरों को भी पढ़ाये। प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली, 011-23977216, 65360255 - ***डॉ. विवेक आर्य, समीक्षक***

पृष्ठ 3 का शेष

है। यही दशा मनुष्य की है। उसके शरीर तथा मन में अनेक दोष भरे रहते हैं। संस्कारों के द्वारा उन दोषों को दूर करके मनुष्य को निर्दोष बनाकर समाजोपयोगी बनाने का यत्न किया जाता है। संस्कारों के सम्बन्ध में मनु जी कहते है-

गार्भौर्होमैजतिकर्मचौवमौञ्जी निबन्धनैः।
वैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानारुपमृज्यते।।

अर्थात् विविध संस्कारों के द्वारा द्विजों के माता-पिता सम्बन्धी तथा अन्य दोषों का शमन किया जाता है। संस्कारों आदि के द्वारा मनुष्य को सभी दृष्टियों से समुन्नत बनाने की जो परम्परा अविच्छिन रूप से चलती है उसे ही संस्कृति कहते है। मानव मात्र के लिए एक ही संस्कृति है जबकि सभ्यता प्रत्येक देश, जाति या समुदाय की अपनी पृथक्-पृथक हैं।

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार
बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली-34

पृष्ठ 5 का शेष

व्यवस्था मंत्री, श्री यश आर्य को प्रचार मंत्री व श्रीमती सुनीति आर्या को वीरांगना दल की संचालिका के पद पर नियुक्त करते हुये सभी को नियुक्ति पत्र दिए। आयोजन में सभी नवनियुक्त अधिकारियों का करतल ध्वनि व जयघोष द्वारा स्वागत किया गया।

आयोजन में मॉरीशस से पधारें श्री उदयनाराण गंगू जी व सहयोगी को मंच पर आमन्त्रित कर दल व सभा के अधिकारियों ने माल्यार्पण कर स्वागत व अभिनन्दन किया।

संचालक जी ने अगली बार इस आयोजन को ओर बड़े स्तर पर आयोजित करने का सभी को आशवासन दिया व आये हुये सभी अतिथियों का धन्यवाद करते हुये शान्तिपाठ कर आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। कार्यक्रम के उपरान्त दल की ओर से सुन्दर भोजन की व्यवस्था रखी गई थी।

- बृहस्पति आर्य, महामन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली-110065

प्रधान : श्री ओ. पी. वर्मा
मन्त्री : श्री सुशील आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री विजय गाबा

आर्य समाज केशव पुरम् लारेंस रोड, नई दिल्ली-110035

प्रधान : श्री सत्यवीर पसरीचा
मन्त्री : श्री मनवीर सिंह राणा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रताप नारायण

आर्य समाज गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका, सब्जी मंडी, दिल्ली-7

प्रधान : श्री राजकुमार आहूजा
मन्त्री : श्री राजेन्द्र मदान
कोषाध्यक्ष : श्री देवेन्द्र कुमार

खेद व्यक्त

खेद है कि आर्य सन्देश के गत अंक दिनांक 7 अक्तूबर से 13 अक्तूबर, 2013 प्रैस गड़बड़ी होने के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु.
आर्यजन अपनी आर्यसमाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आवश्यकता है

आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित करने हेतु **प्रबन्धक** की आवश्यकता है।

इसी के साथ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की की भी आवश्यकता है। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
Email:aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 4 का शेष

महात्मा गाँधी, इस्लाम और .....

नाम मार्मिक पत्र -तुम्हारे आचरण से मेरे लिए जीवन भारी हो गया है।

मेरे प्रिय पुत्र हीरालाल, मैंने सुना हैं कि तुमको मद्रास में आधी रात में पुलिस के सिपाही ने शराब के नशे में असभ्य आचरण करते देखा और गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन तुमको अदालत में पेश किया गया। निस्संदेह वे भले आदमी थे, जिन्होंने तुम्हारे साथ बड़ी नरमाई का व्यवहार किया। तुमको बहुत साधारण सजा देते हुए मजिस्ट्रेट ने भी तुम्हारे पिता के प्रति आदर का भाव जाहिर किया। जबसे मैंने इस घटना का समाचार सुना है मेरा दिल बहुत दुखी है। मुझे नहीं मालूम कि तुम उस रात्रि को अकेले थे या तुम्हारे कुसाथी भी तुम्हारे साथ थे?कुछ भी तुमने जो किया ठीक नहीं किया। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं तुम्हारे इस बारे में क्या कहूँ? मैं वर्षों से तुमको समझाती आ रही हूँ कि तुमको अपने पर कुछ काबू रखना चाहिए। पर, तुम दिन पर दिन बिगड़ते ही जाते हो? अब तो मेरे लिए तुम्हारा आचरण इतना असह्य हो गया है कि मुझे अपना जीवन ही भारी मालूम होने लगा है। जरा सोचो तो, तुम इस बुढ़ापे में अपने माता-पिता को कितना कष्ट पहुँचा रहे हो? तुम्हारे पिता किसी को कुछ भी नहीं कहते, पर मैं जानती हूँ की तुम्हारे आचरण से उनके हृदय पर कैसी चोटें लग रही हैं? उनसे उनका हृदय टुकड़े टुकड़े हो रहा है। तुम हमारी भावनाओं को चोट पहुँचा कर बहुत बड़ा पाप कर रहे हो। हमारे पुत्र होकर भी तुम दुश्मन का सा व्यवहार कर रहे हो। तुमने तो हया-शर्म सबको तिलांजलि दे दी हैं। मैंने सुना है कि इधर अपनी आवारागर्दी से तुम अपने महान पिता का मजाक भी उड़ाने लग गये हो। तुम जैसे अकलमंद लड़के से यह उम्मीद नहीं थी। तुम महसूस नहीं करते कि अपने पिता की अपकीर्ति करते हुए तुम अपने आप ही जलील होते हो। उनके दिल में तुम्हारे लिए सिवा प्रेम के कुछ नहीं हैं। तुम्हें पता है कि वे चरित्र की शुद्धि पर कितना जोर देते हैं, लेकिन तुमने उनकी सलाह पर कभी ध्यान नहीं दिया। फिर भी उन्होंने तुम्हें अपने पास रखने, पालन पोषण करने और यहाँ तक कि तुम्हारी सेवा करने के लिए रजामंदी प्रगट की। लेकिन तुम हमेशा कृतघ्नी बने रहे। उन्हें दुनिया में और भी बहुत से काम हैं। इससे ज्यादा और तुम्हारे लिये वे क्या करे? वे अपने भाग्य को कोस लेते हैं। परमात्मा ने उन्हें असीम इच्छा शक्ति दी हैं और परमात्मा उन्हें यथेच्छ आयु दे कि वे अपने मिशन को पूरा कर सकें। लेकिन मैं तो एक कमजोर बूढ़ी औरत हूँ और यह मानसिक व्यथा बर्दाश्त नहीं होती। तुम्हारे पिता के पास रोजाना तुम्हारे व्यवहार की शिकायतें आ रही हैं उन्हें वह सब कड़वी घूंट पीनी पड़ती है। लेकिन तुमने मेरे मुँह छुपाने तक को कहीं भी जगह नहीं छोड़ी हैं। शर्म के मारे में परिचितों या अपरिचितों में उठने-बैठने लायक भी नहीं रही हूँ। तुम्हारे पिता तुम्हें हमेशा क्षमा कर देते हैं, लेकिन याद रखो, परमेश्वर तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

मद्रास में तुम एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के मेहमान थे। परन्तु तुमने उसके आतिथ्य का नाजायज फायदा उठाया और बड़े बेहूदा व्यवहार किये। इससे तुम्हारे मेजबान को कितना कष्ट हुआ होगा? प्रतिदिन सुबह उठते ही मैं काँप जाती हूँ कि पता नहीं आज के अखबार में क्या नयी खबर आयेगी? कई बार मैं सोचती हूँ कि तुम कहाँ रहते हो? कहाँ सोते हो और क्या खाते हो? शायद तुम निषिद्ध भोजन भी करते हो। इन सबको सोचते हुए बेचैनी में पलकों पर रातें काट देती हूँ। कई बार मेरी इच्छा तुमको मिलने की होती हैं लेकिन मुझे नहीं सूझता कि मैं तुम्हें कहाँ मिलूँ? तुम मेरे सबसे बड़े लड़के हो और अब पचासवें पर पहुँच रहे हो। मुझे यह भी डर लगता रहता है कि कहीं तुम मिलने पर मेरी बेइज्जती न कर दो।

मुझे मालूम नहीं कि तुमने अपने पूर्वजों के धर्म को क्यूँ छोड़ दिया है , लेकिन सुना हैं तुम दूसरे भोले-भाले आदमियों को अपना अनुसरण करने के लिए बहकाते फिरते हो? क्या तुम्हें अपनी कमियाँ नहीं मालूम? तुम 'धर्म' के विषय में जानते ही क्या हो? तुम अपनी इस मानसिक अवस्था में विवेक बुद्धि नहीं रख सकते? लोगों को इस कारण धोखा हो जाता है क्यूंकि तुम एक महान पिता के पुत्र हो। तुम्हें धर्म उपदेश का अधिकार ही नहीं क्यूंकि तुम तो अर्थदास हो। जो तुम्हें पैसा देता रहे तुम उसीके रहते हो। तुम इस पैसे से शराब पीते हो और फिर प्लेटफार्म पर चढ़कर लेक्चर फटकारते हो। तुम अपने को और अपनी आत्मा को तबाह कर रहे हो। भविष्य में यदि तुम्हारी यही करतूतें रहीं तो तुम्हें कोई कोड़ियों के भाव भी नहीं पूछेगा। इससे मैं तुम्हें कहती हूँ कि जरा डरो, विचार करो और अपनी बेवकूफी से बाज आओ। मुझे तुम्हारा धर्म परिवर्तन बिलकुल पसंद नहीं है। लेकिन जब मैंने पत्रों में पढ़ा कि तुम अपना सुधार करना चाहते हो तो मेरा अंत:करण इस बात से आह्लादित हो गया कि अब तुम ठीक जिंदगी बसर करोगे लेकिन तुमने तो उन सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। अभी बम्बई में तुम्हारे कुछ पुराने मित्रों और शुभ चाहने वालों ने तुम्हें पहले से भी बदतर हालत में देखा है। तुम्हें यह भी मालूम है कि तुम्हारी इन कारस्तानियों से तुम्हारे पुत्र को कितना कष्ट पहुँच रहा है। तुम्हारी लड़कियाँ और तुम्हारा दामाद सभी इस दु:ख भार को सहने में असमर्थ हो रहे हैं, जो तुम्हारी करतूतों से उन्हें होता है।

जिन मुसलमानों ने हीरालाल के मुस्लमान बनने और उसकी बाद की हरकतों में रूचि दिखाई है, उनको संबोधन करते हुए श्रीमती गाँधी लिखती हैं-

'आप लोगों के व्यवहार को मैं समझ नहीं सकी। मुझे तो सिर्फ उन लोगों से कहना है, जो इन दिनों मेरे पुत्र की वर्तमान गतिविधियों में तत्परता दिखा रहे हैं।'

- शेष अगले अंक में

मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना के शती वर्ष के अवसर पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस

5 से 8 दिसम्बर, 2013

स्थान : श्रीमती एल. पी. गोविनरामेन वैदिक केन्द्र युन्यन वेल, त्रुआ बुतिक

विषय : भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में योगदान।

विशिष्ट अतिथि : डॉ. रामप्रकाश (सासंद)

सम्मेलन में जाने के इच्छुक आर्यजन अपना पंजीकरण कराएं

पंजीकरण फार्म WWW.THEARYASAMAJ.ORG ;

WWW.ARYASABHAMAURITITUS.MU पर उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

हरिदेव रामधनी, महामन्त्री

आर्य सभा मॉरीशस, E-MAIL: ARYAMU@INTNET.MU

प्रो. कथूरिया साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा से पुरस्कृत-सम्मानित

राजस्थान के अग्रणी साहित्यिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक प्रतिष्ठान साहित्य मण्डल ने **'हिंदी लाओ : देश बचाओ'** समारोह के अवसर पर भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'श्री मनोहर कोठारी सम्मान' से सम्मानित करते हुए ग्यारह हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ अभिनन्दन पत्र, प्रशस्ति-पत्र, श्रीनाथ जी की स्वर्णिम आभा की प्रतिमा, शाल, अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंट किये। उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान उनकी विद्वत्ता एवं समर्पित हिन्दी सेवा के लिए श्रीनाथ मंदिर के मुखिया श्री नरहरि ठाकर एवं निष्पादन अधिकारी ने एक भव्य समारोह में प्रदान किया। इस अवसर पर श्री कथूरिया जी ने कहा कि आगामी वर्ष से इतनी ही राशि संस्था को दान देंगे, ताकि उनकी माता श्रीमती कृष्णा देवी कथूरिया की स्मृति में संस्था किसी सुयोग्य विद्वान् को एक और पुरस्कार प्रदान कर सके।

पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में 22 सितम्बर 2013, रविवार को **'पूर्व छात्रा स्नेह मिलन समारोह'** का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर वसुधेश आर्य एवं अध्यक्ष आनन्द कुमार आर्य, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा विद्यालयी छात्रा भूमिका एवं चांदनी ने वैदिक परम्परानुसार तिलक लगाकर बैण्ड की अगुवाई में स्वागत किया।

विद्यालय समिति प्रधान, जगदीश प्रसाद गुप्ता ने अपने संबोधन में संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्था छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ सादा जीवन उच्च विचार एवं प्राचीन वैदिक संस्कृति पर विशेष बल देती है। संस्था में बालिकाओं को देशभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, अनुशासित, जिम्मेदार, स्वस्थ एवं उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। इसका पूर्ण श्रेय संस्थापक प्रधान स्व. श्री छोटूसिंह आर्य को जाता है।

इसके उपरान्त सन् 1945 में प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाली छात्राओं श्रीमती सरला देवी, शकुन्तला एवं सुभद्रा देवी को तथा प्रथम अध्यापिकाओं श्रीमती लीलावती एवं सुशीला ग्रोवर को कमला शर्मा ने माल्यार्पण कर तथा जगदीश जी एवं प्रदीप जी ने शॉल उढ़ाकर और अमरमुनि जी ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया जो आज 80 वर्ष से ऊपर हैं। हैदराबाद, कलकत्ता, दिल्ली, नोएडा, हरियाणा, जयपुर, फरीबाद से छात्राएँ समारोह में सम्मिलित होने के लिए आईं।

प्रदीप जी ने आगन्तुक लगभग 1000 पूर्व छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं जिनके हौंसले बुलंद होते हैं।

अध्यक्ष आनन्दजी आर्य ने अपने संबोधन में कहा आर्य संस्थाएँ नारी को शिक्षित ही नहीं करती बल्कि उन्हें वीरांगना बनाती हैं जिससे वे आत्मनिर्भर बनती हैं और समाज में अपना स्थान बनाती हैं। अंत में समिति निदेशक कमला शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सार्वजनिक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं आर्यसमाजी प्रतिष्ठानों एवं विशेष व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारियां एकत्र करने के लिए सभा की ओर से **श्रीमती मीनू बत्रा** को आउटसोर्सिंग की गई है। वे आपको मो. नं. **9650183335** से फोन करके जानकारियां देने के लिए निवेदन करेंगी। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उलब्ध कराने का कष्ट करें। प्राप्त सूचनाओं को सभा के आई.वी.आर. सिस्टम में जन-साधारण की जानकारी के लिए दर्ज किया जाएगा। सभा का आई.वी.आर.एस. नं. 011-23488888 है।- **विनय आर्य, महामन्त्री**

आर्य समाज ए.जी.सी.आर. एन्कलेव दिल्ली में

संगीतमय भव्य गऊकथा एवं यज्ञ सम्पन्न

27, 28, 29 सितम्बर 2013 को प्रात:कालीन सत्र में 8 से 10 बजे तक गुरुकुल हसनपुर की कन्याओं द्वारा यज्ञ में सस्वर वैदिक सूक्तमाला (गायत्री-महामंत्र, आत्मपावन सूक्त, लक्ष्मी सूक्त, सरस्वती सूक्त, सुमंगल सूक्त, संजीवनम् सूक्त, वाण्ज्य सूक्त) के मंत्रो का पाठ श्री यशपाल शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में हुआ। बीच-बीच में मन्त्रों का भाव यज्ञमानों और उपस्थित श्रद्धालुओं के बीच रखा गया, जिसकी उन्होंने बहुत प्रशंसा की।

सायंकालीन सत्र में 3 से 6 बजे पं० धूमसिंह गोवंशी जी एवं साथियों द्वारा संगीतमय गऊकथा तीनों दिन हुई। यज्ञ स्थल पर गऊमाता के साक्षात दर्शन, पालन और दुग्ध से किन राजाओं एवं प्रजा ने लाभ उठाकर सन्तान तक की प्राप्ति की, जानकर जनता का ज्ञानवर्धन हुआ। दोनों सत्र में श्रीमती कुसुम गुप्ता एवं सत्यवती वार्ष्णेय आदि के सहयोग से प्रसाद वितरण किया गया। **''देवतं ब्रह्म गायत्''**, **'धेनु सदनम् रयीणाम्'**, **गाव: विश्वस्य मातर:, गाव: स्वर्गस्य सोपानं,** इत्यादि पटकों, झण्डों से 243 ए.जी.सी.आर. एन्कलेव का भव्य भवन सुशोभित था। दोनों समय इस अभूत-पूर्व कार्य में उपस्थिति भी संतोषजनक थी।

आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं सुयोग्य शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने इस कार्यक्रम में उपस्थित जनता को सम्बोधित किया और वेद के साथ गऊकथा जोड़कर आर्य समाज, सभी महिला मंडलों, गौरी शंकर समीति, रेजिडैन्ट वैलफेयर ऐसोसिऐशन, हाऊस बिल्डिंग सोसाइटी ए.जी.सी.आर एन्कलेव के सभी निवासियों को जोड़कर लीक से हटकर इस कार्यक्रम को आयोजित कराने की आर्य डा० ओमप्रकाश भट्नागर ''यज्ञ श्री'' (मंत्री) की भूरी-भूरी प्रशंसा की। एक हजार राशि देने वाले सभी दानदाताओं एवं लब्ध प्रतिष्ठित सज्जनों को लघु ग्रन्थ संग्रह पुस्तक भेंट की गई।

वैदिक (हिन्दू) धर्म में लौटे 48 परिवार

स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर हिन्दू समाज को धर्मांतरण से बचाने के लिए धर्म जागरण समन्वय विभाग द्वारा धर्म रक्षा यज्ञ एव घर वापसी का आयोजन प्रहलादराय टिकमानी इंटर कालेज में आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता एवं क्षेत्र प्रमुख धर्म जागरण राजेश्वर सिंह थे। इस अवसर पर 48 परिवारों ने फिर से हिन्दू धर्म को अपनाया। पं० नवीन आर्य ने हवन संपन्न कराया। वाल्मीकि समाज के 48 परिवारों ने पूर्व हिन्दू धर्म को छोड़ ईसाई मत स्वीकार कर लिया गया था। इन परिवारों को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। इसके बाद यह परिवार फिर से हिन्दू धर्म में लौट आया। हिन्दू धर्म अपनाने वालों में रहचटी, रुकनपुर, कटरा मीरा, बेझिया, मक्खनपुर, कमालपुर, कुतकपुर, कोडर आदि के परिवार शामिल थे। कार्यक्रम में आर्य समाज का पूर्ण सहयोग रहा। वक्ताओं ने कहा कि हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। हिन्दूओं के शास्त्रों पर विदेशों में वैज्ञानिक शोध हो रहे है। डा. रामौतार आर्य, डा. पीएस राना, नारायण सिंह, राममनोहर अग्रवाल, रवीन्द्र सिंह, छत्रपाल सिंह डा. ओमशरण आर्य, महेशबाबू आर्य, पं. विद्याराम आर्य थे। संचालन डा. राना ने किया तथा आभारी व्यक्त अजय प्रताप ने किया।

साभार :

शुद्धि समाचार अक्तूबर-2013

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 अक्तूबर, 2013 से रविवार 20 अक्तूबर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17/18 अक्तूबर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 अक्तूबर, 2013

विश्वव्यापी आर्य समाज के समाचार

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक आर्डर बुक कराने पर 10% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/– रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर